बुकर सम्मान : बानू मुश्ताक

ISSN 2394-1723
मूल्य : 40 रुपये

वागर्थ

वर्ष 31 अंक 356 जुलाई–2025

सिद्ध-नाथ साहित्य का महत्व

सदानंद साही माधव हाड़ा अनिल कुमार राय
गोपाल प्रधान दिनेश कुशवाह
(प्रस्तुति : आदित्य कुमार गिरि)

कहानियाँ

प्रिया राणा शंकर राकेश भारतीय
रणीराम गढ़वाली बानू मुश्ताक (कन्नड़)

भारतीय भाषा परिषद

ISSN : 2394-1723

वागर्थ

भारतीय भाषा परिषद की मासिक पत्रिका

वर्ष 31, अंक 356, जुलाई 2025

संपादक
शंभुनाथ

प्रबंध संपादक
प्रदीप चोपड़ा

प्रकाशक
डॉ. कुसुम खेमानी

संपादन सहयोग
अंक सज्जा
सुशील कान्ति

ऑनलाइन मल्टीमीडिया संपादक
उपमा ऋचा
upmamcreat@gmail.com

संपादकीय विभाग
36 ए, शेक्सपियर सरणी
कोलकाता–700017
vagarth.hindi@gmail.com
7449503734
(दिन 12 बजे से संध्या 6 बजे)

आवरण
तारक नाथ राय

इस अंक में

क्या भक्ति एक अधूरी रह गई क्रांति है : **संपादकीय** 5

कहानियां

सुक्खो देवी : **प्रिया राणा** 13
बेबी सूट : **शंकर** 18
अतीत में अटका हुआ आदमी : **राकेश भारतीय** 23
हरे दुपट्टे वाली : **रणीराम गढ़वाली** 33
अरबी के उस्ताद और गोभी मंचूरियन (कन्नड़) :
बानू मुश्ताक़ (अग्रेजी अनुवाद : **दीपा भास्थी**)
(अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद : **उपमा ऋचा**) 39

कविताएं

दीप्ति कुशवाह/मनीषा झा/राजेंद्र कुमार/धनंजय शर्मा
नंदा पांडे/कमल किशोर पिपलवा/देवेश पथ सारिया
कुमार विनोद/शिवकुमार पराग/राजेश कुमार
अनिल विभाकर/ 49
मणिपुरी कविताएं : **कोइजम शांतिबाला**
(हिंदी अनुवाद : **लोङ्जम रोमी देवी**) 63

परिचर्चा

सिद्ध–नाथ साहित्य का महत्व : **सदानंद साही/माधव हाड़ा**
अनिल कुमार राय/गोपाल प्रधान/दिनेश कुशवाह
(प्रस्तुति : **आदित्य कुमार गिरि**) 65

पुस्तक डायरी

नीला कॉर्नफ्लावर : **अनामिका** 87

विश्वदृष्टि

मेरी क्रिसमस (जापानी कहानी) : **ओसामु दाजाई**
(जापानी से अनुवाद : **अनुश्री**) 94

समीक्षा संवाद

नई सदी के नए कवि : **आनंद गुप्ता**

(निशांत, स्मिता सिन्हा, सपना भट्ट, निर्मला तोदी, संजीव कौशल, गौरव पांडेय की पुस्तकें) 100

सोशल मीडिया 113

विविध

पाठक संसद/किताबें 116

लघुकथा

अंतिम इच्छा : **गाविंद भारद्वाज** 38

बतरस

नया मोड़ (कहानी) : **कुसुम खेमानी** 118

देश-देशांतर

केदारनाथ सिंह/ चेस्लाव मिलोज (पोलिश)

मल्टी मीडिया

धूमिल की कविता / वाचन : **विवेक सिंह**

कविताओं में रेखांकन :
नेट से साभार
कवर चित्र साभार : **लोरी मिराबेली**

वागर्थ सदस्यता और बिक्री संपर्क

एक प्रति : 40/-
वार्षिक सदस्यता : 450 रुपये + 510/- (नई रजिस्टर्ड डाक दर) = 960/-
सामान्य वार्षिक सदस्यता : 450 रुपये (साधारण डाक व्यय सहित)
तीन साल : 1350 रुपये + 1530/- (नई रजिस्टर्ड डाक दर) = 2880/-
आजीवन : 10,000 रुपये/**(साधारण डाक)** विदेश : **वार्षिक** : 80 डॉलर
भारतीय भाषा परिषद के नाम से चेक या ड्राफ्ट भेजें
एजेंसियों और सदस्यों द्वारा चेक से भुगतान Bharatiya Bhasha Parishad के नाम या Neft द्वारा : Kotak Mahindra Bank, Branch : Loudon Street, A/c no. 8111974982, IFSC Code KKBK0006590 पर भुगतान करें।
भुगतान के बाद एस एम एस या व्हट्सअप कर दें 8910269814 : **मीनाक्षी दत्ता**
जानकारी : कार्यालय के दिन दोपहर 12 बजे से संध्या 6 बजे तक
समय पर भुगतान करने वाली एजेंसियों को ही हम भविष्य में पत्रिका भेज पाते हैं।

● प्रकाशित रचनाओं से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
© सर्वाधिकार सुरक्षित
● वागर्थ से संबंधित सभी विवाद कोलकाता न्यायालय के अधीन होगा।

● वेबसाइट : **www.bharatiyabhashaparishad.org**

वागर्थ प्रबंध प्रभार **: मीनाक्षी दत्ता**
वितरण तथा अन्य कार्य **: अशोक बारीक, बैद्यनाथ कामती, खेत्राबासी बारीक, संतोष सिंह, प्रदीप नायक, प्रेम नायक**

आप क्यू आर कोड स्कैन करके भी **भारतीय भाषा परिषद** के नाम भुगतान कर सकते हैं। भुगतान करने के बाद मोबाइल नंबर सहित संपूर्ण विवरण भेज दें।

संपादकीय

क्या भक्ति एक अधूरी रह गई क्रांति है

भक्त कवियों ने धर्म को बाह्याडंबर की जगह ईश्वरानुभूति और लोकहित का विषय बनाना चाहा था। लगभग 1200 सालों तक हमारे देश में भक्ति आंदोलन चला। इसका उदय तमिलनाडु में हुआ, तभी कहते हैं– 'भक्ति द्राविड़ उपजी'! भक्त कवि अपने अनुभव की रोशनी में धर्म को कहीं 'डि–कंस्ट्रक्ट' कर रहे थे और कहीं 'रि–कंस्ट्रक्ट' कर रहे थे। वे रूढ़ियों का खंडन कर रहे थे और उच्च मूल्यों का सृजन कर रहे थे।

उन्होंने धर्म की रूखी धरती पर अपने संगीतमय पदों की रचना की जो लोक कंठों में बसी। हालांकि कई भक्तों को अपने नए विचारों के लिए अपमान सहना पड़ा। रामानुजाचार्य (11वीं सदी) जैसे दार्शनिक को चोल शासन के तमिल क्षेत्र से भागकर विजयनगर राज्य में शरण लेनी पड़ी। असम के वैष्णव भक्त शंकरदेव (15वीं–16वीं सदी) शाक्तों के डर से कहां–कहां भागते रहे! मीराबाई को घर और बाहर उत्पीड़न सहना पड़ा। क्रूर बादशाहों के हुक्म पर कई सूफी फांसी पर चढ़े। फिर भी सैकड़ों साल से भक्त कवि बोल रहे थे, गा रहे थे, नृत्य कर रहे थे। कई कवि दूर–दूर की यात्राओं पर निकले ताकि धर्म में फैला अंधेरा छंटे और जीवन–प्रवाह के मार्ग से 'ब्लॉकेज' अर्थात रुकावटें हटें।

वल्लभाचार्य आंध्र से वृंदावन गए। रामानंद ने दक्षिण भारत की यात्रा की। बंगाल के श्रीचैतन्य पुरी गए। उन्होंने दो शिष्यों को बंग क्षेत्र से वृंदावन भेजा। मीरा राजस्थान से गुजरात गईं। दादू दयाल गुजरात से राजस्थान गए। वे सभी भक्त कवि घूम–घूमकर सामाजिक सरहदों को चुनौती देते हुए सांस्कृतिक जागरण ला रहे थे। उन्होंने कितनी सफलता हासिल की या कितने विफल हुए, इससे अधिक यह देखना जरूरी है कि वह सब कितना अधिक सौंदर्य–भरा था जहां मनुष्य अपना पुनराविष्कार कर रहा था।

भक्त कवियों के आंदोलन पर हरेक को विस्मय होना चाहिए जबकि आज न कोई अपर और बसवण्णा को याद करता है, न ज्ञानेश्वर और तुकाराम को, न सूर, कबीर, रैदास, मीरा और तुलसी कहीं उद्धृत किए जाते हैं। जिन कवियों ने राम और कृष्ण को लोकमानस में प्रतिष्ठित किया, वे अब पिछवाड़े में पड़े हैं।